# संपादकीय

प्रिय पाठकों,

देश अपना 77वां स्वतंत्रता दिवस बड़े धूम-धाम और पूरे उत्साह के साथ मनाने के लिए तैयार है। आज़ादी की बात आते हीं हम अपने अधिकारों की रक्षा के लिए जहाँ सजग हो उठते हैं। वहीं कर्तव्यों की बात आने पर उससे अपने आप को दूर हीं रखना चाहते हैं। इसी मानसिकता ने देश का सर्वाधिक नुकसान किया है। अगर हम सब देशवासी अपने दायित्वों का भी अधिकारों की भांति ख़्याल रखें तो देश उन्नति की राह पर तेजी से आगे बढ़ता रहेगा। धर्म, जाति, पंथ, मजहब, ऊंच-नीच से आगे बढ़कर मानवीयता के नज़रिये से सोचना होगा। ये सभी तोड़ने के लिए नहीं बल्कि देश को जोड़ने के लिए हों। तभी जाकर हमारा प्यारा देश अनेकता में एकता की सही पहचान बन सकेगा। जब एक दूसरे की जाति, धर्म, भाषा, रहन-सहन, खान-पान का सम्मान होगा तो सामाजिक विषमता दूर होगी और परस्पर प्रेम, सौहार्द की भावना बढ़ेगी।

पत्रिका का यह अंक इसी सोच के साथ स्वतंत्रता दिवस की देशप्रेम की सच्ची भावना, सावन महोत्सव और हिंदी दिवस की वास्तविक दशा और दिशा को लेकर उपस्थित है। पत्रिका कविता के साथ नारी एवं आदिवासी विमर्श पर शोध लेख को भी समेटे हुए है। सेवासदन और अस्तित्व उपन्यासों में स्त्री की अस्मिता और संघर्ष की बात को बखूबी बतलाया है। रंगमंचीय संसार में आदिवासी रंगमंच को लेकर भी विस्तार से चर्चा है। हिंदी सिनेमा में हिंदी भाषा के बदलते स्वरूप पर भी चर्चा रोचक है। जहाँ एक तरफ प्रेम की महत्ता को अपने अनोखे तरीके से ग़ज़ल के माध्यम से बताने का प्रयास दिखाई देता है। वहीं अपनेपन के एहसास के साथ भी ग़ज़ल के दूसरे रूप को भी बेहतरीन ढंग से दर्शाया है।

आशा है, आपको यह अंक जरूर पसंद आएगा। आप सभी का प्यार ऐसे ही बना रहेगा। आपके अमूल्य सुझावों की अभिलाषा में प्रतीक्षारत...

**आशुतोष श्रीवास्तव**
पीएच.डी. (हिंदी सिनेमा)
एम.फिल. (फिल्म एंड थियेटर)
एम.ए., बी.ए., बी.एड.
यू.जी.सी नेट (हिंदी), सीटेट
अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मैनेजमेंट एंड फ़िल्म प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
भारतीय एवं पाश्चात्य कला और सौंदर्यशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा